سَيَقُوْلُ السُّفَهَآءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلّٰىهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِيْ كَانُوْا عَلَيْهَا ؕ قُلْ لِّلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَ الْمَغْرِبُ ؕ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۱۴۲﴾

142. अब बेवक़ूफ़ लोग येह कहेंगे कि उन (मुसलमानों) को अपने इस क़िब्ले (बैतुल मुक़द्दस) से किस ने फेर दिया जिस पर वोह (पहले से) थे, आप फ़रमा दें : मशरिक़ो मग़्रिब (सब) अल्लाह ही के लिए है। वोह जिसे चाहता है सीधी राह पर डाल देता है।

وَ كَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ وَ يَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ؕ وَ مَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِيْ كُنْتَ عَلَيْهَآ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَّتَّبِعُ الرَّسُوْلَ مِمَّنْ يَّنْقَلِبُ عَلٰى عَقِبَيْهِ ؕ وَ اِنْ كَانَتْ لَكَبِيْرَةً اِلَّا عَلَى الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ ؕ وَ مَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِيْعَ اِيْمَانَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۴۳﴾

143. और (ऐ मुसलमानो !) इसी तरह़ हम ने तुम्हें (ए'तिदाल वाली) बेहतर उम्मत बनाया ताकि तुम लोगों पर गवाह बनो और (हमारा येह बर गुज़ीदह) रसूल ﷺ तुम पर गवाह हो, और आप पहले जिस क़िब्ले पर थे हम ने सिर्फ़ इस लिए मुक़र्रर किया था कि हम (परख कर) ज़ाहिर कर दें कि कौन (हमारे) रसूल ﷺ की पैरवी करता है (और) कौन अपने उलटे पांव फिर जाता है, और बेशक येह (क़िब्ले का बदलना) बड़ी भारी बात थी मगर उन पर नहीं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत (व मा'रेफ़त) से नवाज़ा, और अल्लाह की येह शान नहीं कि तुम्हारा ईमान (यूंही) ज़ाए' कर दे, बेशक अल्लाह लोगों पर बड़ी शफ़्क़त फ़रमानेवाला महरबान है।

قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَآءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰىهَا ۪ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَ حَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ؕ وَ اِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ؕ وَ مَا

144. (ऐ ह़बीब!) हम बार बार आप के रुख़े अनवर का आस्मान की तरफ़ पलटना देख रहे हैं, सो हम ज़रूर बिज़-ज़रूर आप को उसी क़िब्ले की तरफ़ फेर देंगे जिस पर आप राज़ी हैं, पस आप अपना रुख़ अभी मस्जिदे ह़राम की तरफ़ फेर लीजिए, और (ऐ मुसलमानो!) तुम जहां कहीं भी हो पस अपने चेहरे उसी की तरफ़ फेर लो, और वोह लोग जिन्हें किताब दी गई है ज़रूर जानते हैं कि येह (तह़वीले क़िब्ला का हुक्म) उन के रब

اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۴﴾

की तरफ़ से ह़क़ है, और अल्लाह उन कामों से बे ख़बर नहीं जो वोह अंजाम दे रहे हैं।

وَلَئِنْ اَتَيْتَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ بِكُلِّ اٰيَةٍ مَّا تَبِعُوْا قِبْلَتَكَ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ؕ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ اِنَّكَ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۴۵﴾

145. और अगर आप अह्ले किताब के पास हर एक निशानी (भी) ले आएं तब भी वोह आप के क़िब्ले की पैरवी नहीं करेंगे और न आप ही उनके क़िब्ले की पैरवी करनेवाले हैं और वोह आपस में भी एक दूसरे के क़िब्ले की पैरवी नहीं करते (उम्मत की ता'लीम के लिए फ़रमाया) और अगर (ब फर्ज़े मुह़ाल) आपने (भी) अपने पास इल्म आ जाने के बाद उन की ख़्वाहिशात की पैरवी की तो बेशक आप (अपनी जान पर) ज़ियादती करने वालों से हो जाएंगे।

وقف لازم

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ؕ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۴۶﴾

146. और जिन लोगों को हम ने किताब अ़ता फ़रमाई है वोह इस रसूल (आख़िरुज़्ज़मां हज़रत मुह़म्मद ﷺ और उन की शानो अ़ज़मत) इसी तरह़ पेहचानते हैं जैसा कि बिला शुब्हा अपने बेटों को पेहचानते हैं, और यक़ीनन इन्ही में एक तब्क़ा हक़्क़ को जान बूझ कर छुपा रहा है।

وقف ممنوع

اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿۱۴۷﴾

147. (ऐ सुनने वाले !) ह़क़्क़ तेरे रब की तरफ़ से है सो तू हरगिज़ शक करने वालों में से न हो।

ع ۱۷ ۱

وَلِكُلٍّ وِّجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيْهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ؕ اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يَاْتِ بِكُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۴۸﴾

148. और हर एक के लिए तवज्जोह की एक सम्त (मुक़र्रर) है वोह उसी की तरफ़ रुख़ करता है पस तुम नेकियों की तरफ़ पेश क़दमी किया करो, तुम जहां कहीं भी होगे अल्लाह तुम सब को जमा' कर लेगा। बे शक अल्लाह हर चीज़ पर ख़ूब क़ादिर है।

وقف النبی صلی اللہ علیہ وسلم

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَاِنَّهٗ

149. और तुम जिधर से भी (सफ़र पर) निक्लो अपना चेह्रा (नमाज़ के वक़्त) मस्जिदे ह़राम कि तरफ़ फेर लो,

لَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ
عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۹﴾

और येही तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ है, और अल्लाह तुम्हारे आ'माल से बे ख़बर नहीं।

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ
شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَحَيْثُ مَا
كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ۙ
لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ ۗ
اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ ۗ فَلَا
تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِيْ ۗ وَلِاُتِمَّ نِعْمَتِيْ
عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۱۵۰﴾

150. और तुम जिधर से भी (सफ़र पर) निक्लो अपना चेह्रा (नमाज़ के वक़्त) मस्जिदे ह़राम कि तरफ़ फेर लो, और (ऐ मुसलमानो !) तुम जहां कहीं भी हो सो अपने चेहरे उसी की सम्त फेर लिया करो ताकि लोगों के पास तुम पर ए'तिराज़ करने की गुंजाइश न रहे सिवाए उन लोगों के जो उन में ह़द से बढ़नेवाले हैं, पस तुम उन से मत डरो मुझ से डरा करो, इस लिए कि मैं तुम पर अपनी ने'मत पूरी कर दूं और ताकि तुम कामिल हिदायत पा जाओ।

كَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ
يَتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِنَا وَ يُزَكِّيْكُمْ
وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ
وَيُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۵۱﴾

151. इसी तरह़ हमने तुम्हारे अन्दर तुम्हीं में से (अपना) रसूल भेजा जो तुम पर हमारी आयतें तिलावत फ़रमाता है और तुम्हें (नफ़्सन-व-क़ल्बन) पाक साफ करता है और तुम्हें किताब की ता'लीम देता है और ह़िक्मतो दानाई सिखाता है और तुम्हें वोह (असरारे मा'रेफ़तो ह़क़ीक़त) सिखाता है जो तुम न जानते थे।

فَاذْكُرُوْنِيْٓ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْا لِيْ
وَلَا تَكْفُرُوْنِ ﴿۱۵۲﴾

152. सो तुम मुझे याद किया करो मैं तुम्हें याद रखूंगा और मेरा शुक्र अदा किया करो और मेरी नाशुक्री न किया करो।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا
بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ
الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۵۳﴾

153. ऐ ईमानवालो ! सब्र और नमाज़ के ज़रीए (मुझ से) मदद चाहा करो, यक़ीनन अल्लाह सब्र करने वालों के साथ (होता) है।

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ وَّ

154. और जो लोग अल्लाह की राह में मारे जाएं उन्हें मत कहा करो कि येह मुर्दह हैं, (वोह मुर्दह नहीं) बल्कि

لٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ ﴿١٥٤﴾

ज़िन्दह हैं लेकिन तुम्हें (उन की ज़िन्दगी का) शऊ़र नहीं।

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَ نَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ؕ وَ بَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٥٥﴾ۙ

155. और हम ज़रूर बिज़ ज़रूर तुम्हें आज़माएंगे कुछ ख़ौफ़ और भूक से और कुछ मालों और जानों और फलों के नुक़्सान से, और (ऐ ह़बीब!) आप उन सब्र करनेवालों को ख़ुश ख़बरी सुना दें।

الَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿١٥٦﴾ؕ

156. जिन पर कोई मुसीबत पड़ती है तो केहते हैं : बे शक हम भी अल्लाह ही का (माल) हैं और हम भी उसी की तरफ़ पलट कर जाने वाले हैं।

اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ ۟ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ ﴿١٥٧﴾

157. येही वोह लोग हैं जिन पर उन के रब की तरफ़ से पै दर पै नवाज़िशें हैं और रह़्मत है, और येही लोग हिदायत याफ़्ता हैं।

اِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ اَوِ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ اَنْ يَّطَّوَّفَ بِهِمَا ؕ وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ شَاكِرٌ عَلِيْمٌ ﴿١٥٨﴾

158. बे शक सफ़ा और मर्वह अल्लाह की निशानियों में से हैं, चुनांचे जो शख़्स बैतुल्लाह का ह़ज्ज या उ़म्रह करे तो उस पर कोई गुनाह नहीं कि इन दोनों के दरमियान चक्कर लगाए, और जो शख़्स अपनी ख़ुशी से कोई नेकी करे तो यक़ीनन अल्लाह बड़ा क़द्र शनास (बड़ा) ख़बरदार है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَآ اَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالْهُدٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا بَيَّنّٰهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتٰبِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللّٰهُ وَيَلْعَنُهُمُ اللّٰعِنُوْنَ ﴿١٥٩﴾ۙ

159. बे शक जो लोग हमारी नाज़िल कर्दह खुली निशानियों और हिदायत को छुपाते हैं इस के बा'द कि हम ने उसे लोगों के लिए (अपनी) किताब में वाज़ेह़ कर दिया है तो उन ही लोगों पर अल्लाह ला'नत भेजता है (या'नी उन्हें अपनी रह़्मत से दूर करता है) और ला'नत भेजने वाले भी उन पर ला'नत भेजते हैं।

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَ

160. मगर जो लोग तौबा कर लें और (अपनी)

بَيَّنُوْا فَاُولٰٓئِكَ اَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَ
اَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٦٠﴾

इस्लाह़ कर लें और (हक़ को) ज़ाहिर कर दें तो मैं (भी) उन्हें मुआ़फ़ फ़रमा दूंगा, और मैं बड़ा ही तौबा क़ुबूल करनेवाला महरबान हूं।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَ هُمْ
كُفَّارٌ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللّٰهِ
وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٦١﴾ۙ

161. बे शक जिन्हों ने (हक़ को छुपा कर) कुफ़्र किया और इस हाल में मरे कि वोह काफ़िर ही थे उन पर अल्लाह की और फ़रिश्तों की और सब लोगों की ला'नत है।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ
الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿١٦٢﴾

162. वोह हमेशा इसी (ला'नत) में (गिरफ़्तार) रहेंगे, उन पर से अ़ज़ाब हल्का नहीं किया जाएगा और न ही उन्हें मोह्लत दी जाएगी।

وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا
هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿١٦٣﴾ ع ١٩ ع ٣

163. और तुम्हारा मा'बूद ख़ुदाए वाहिद है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं (वोह) निहायत महरबान बहुत रह़म फ़रमानेवाला है।

اِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ
الَّتِيْ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ
النَّاسَ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ
مِنْ مَّآءٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ
مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ۖ وَّ
تَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ وَالسَّحَابِ
الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ
لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿١٦٤﴾

164. बे शक आस्मानों और ज़मीन की तख़्लीक़ में और रात दिन की गर्दिश में और उन जहाज़ों (और कश्तियों) में जो समन्दर में लोगों को नफ़ा' पहुंचाने वाली चीज़ें उठा कर चलती हैं और उस बारिश के पानी में जिसे अल्लाह आस्मान की तरफ़ से उतारता है फिर उस के ज़रीए ज़मीन को मुर्दह हो जाने के बा'द ज़िन्दह करता है (वोह ज़मीन) जिस में उसने हर क़िस्म के जानवर फैला दिए हैं और हवाओं के रुख़ बदलने में और उस बादल में जो आस्मान और ज़मीन के दरमियान (हुक्मे इलाही का) पाबन्द (हो कर चलता) है (उन में) अ़क़्ल मन्दों के लिए (क़ुद्रते इलाही की बहुत सी) निशानियां हैं।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ اَنْدَادًا يُّحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ ؕ

165. और लोगों में बा'ज़ ऐसे भी हैं जो अल्लाह के ग़ैरों को अल्लाह का शरीक ठेहराते हैं और उन से "अल्लाह से

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ؕ وَلَوْ يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ ۙ اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۙ وَّ اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعَذَابِ ﴿۱۶۵﴾

मुहब्बत'' जैसी मुहब्बत करते हैं, और जो लोग ईमान वाले हैं वोह (हर एक से बढ़ कर) अल्लाह से बहुत ही ज़ियादह मुहब्बत करते हैं, और अगर येह ज़ालिम लोग उस वक़्त को देख लें जब (उख़रवी) अज़ाब उन की आंखों के सामने होगा (तो जान लें) कि सारी क़ुव्वतों का मालिक अल्लाह है और बेशक अल्लाह सख़्त अज़ाब देनेवाला है ।

اِذْ تَبَرَّاَ الَّذِيْنَ اتُّبِعُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا وَرَاَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْاَسْبَابُ ﴿۱۶۶﴾

166. (और) जब वोह (पेशवायाने कुफ़्र) जिन की पैरवी की गई अपने पैरवकारों से बेज़ार होंगे और (वोह सब अल्लाह का) अज़ाब देख लेंगे और सारे अस्बाब उन से मुन्क़ता' हो जाएंगे।

وَقَالَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا لَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّاَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوْا مِنَّا ؕ كَذٰلِكَ يُرِيْهِمُ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ حَسَرٰتٍ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنَ النَّارِ ﴿۱۶۷﴾ ع ۲۰ ۴

167. और (येह बेज़ारी देख कर मुशरिक) पैरव कार कहेंगे काश हमें (दुनिया में जाने का) एक मौक़ा' मिल जाए तो हम (भी) उन से बेज़ारी ज़ाहिर कर दें जैसे उन्हों ने (आज) हम से बेज़ारी ज़ाहिर की है, यूं अल्लाह उन्हें उनके अपने आ'माल उन्ही पर हसरत बना कर दिखाएगा, और वोह (किसी सूरत भी) दोज़ख़ से निकलने न पाएंगे।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ كُلُوْا مِمَّا فِى الْاَرْضِ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۶۸﴾

168. ऐ लोगो ! ज़मीन की चीज़ों में से जो हलाल और पाकीज़ह है खाओ, और शैतान के रास्तों पर न चलो, बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

اِنَّمَا يَاْمُرُكُمْ بِالسُّوْٓءِ وَالْفَحْشَآءِ وَاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۶۹﴾

169. वोह तुम्हें बदी और बेहयाई का ही हुक्म देता है और येह (भी) कि तुम अल्लाह की निस्बत वोह कुछ कहो जिस का तुम्हें (ख़ुद) इल्म न हो।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَآ اَلْفَيْنَا عَلَيْهِ

170. और जब उन काफ़िरों से कहा जाता है कि जो अल्लाह ने नाज़िल फ़रमाया है उसकी पैरवी करो तो केहते हैं (नहीं) बल्कि हम तो उसी (रविश) पर चलेंगे जिस पर

اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ﴿۱۷۰﴾

हम ने अपने बापदादा को पाया है, अगरचे उन के बाप दादा न कुछ अक़्ल रखते हों और न ही हिदायत पर हों।

وَ مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا كَمَثَلِ الَّذِيْ يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ اِلَّا دُعَآءً وَّنِدَآءً ؕ صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۱۷۱﴾

171. और उन काफ़िरों (को हिदायत की तरफ़ बुलाने) की मिसाल ऐसे शख़्स की सी है जो किसी ऐसे (जानवर) को पुकारे जो सिवाए पुकार और आवाज़ के कुछ नहीं सुनता, येह लोग बेहरे, गूंगे, अंधे हैं सो उन्हें कोई समझ नहीं।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَ اشْكُرُوْا لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿۱۷۲﴾

172. ऐ ईमान वालो ! उन पाकीज़ह चीज़ों में से खाओ जो हम ने तुम्हें अ़ता की हैं और अल्लाह का शुक्र अदा करो अगर तुम सिर्फ़ उसी की बन्दगी बजा लाते हो।

اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَ لَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَ مَاۤ اُهِلَّ بِهٖ لِغَيْرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّ لَا عَادٍ فَلَاۤ اِثْمَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۷۳﴾

173. उस ने तुम पर सिर्फ़ मुर्दार और ख़ून और सुव्वर का गोश्त और वोह जानवर जिस पर ज़ब्ह़ के वक़्त ग़ैरुल्लाह का नाम पुकारा गया हो ह़राम किया है, फिर जो शख़्स सख़्त मजबूर हो जाए न तो ना फ़रमानी करने वाला हो और न ह़द से बढ़नेवाला तो उस पर (ज़िन्दगी बचाने की ह़द तक खा लेने में) कोई गुनाह नहीं, बे शक अल्लाह निहायत बख़्शनेवाला महरबान है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَ يَشْتَرُوْنَ بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۙ اُولٰٓئِكَ مَا يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ اِلَّا النَّارَ وَ لَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَ لَا يُزَكِّيْهِمْ ۚۖ وَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۷۴﴾

174. बेशक जो लोग किताब (तौरात की उन आयतों) को जो अल्लाह ने नाज़िल फ़रमाई हैं छुपाते हैं और उस के बदले ह़क़ीर क़ीमत ह़ासिल करते हैं, वोह लोग सिवाए अपने पेटोंमें आग भरने के कुछ नहीं खाते और अल्लाह क़ियामत के रोज़ उन से कलाम तक नहीं फ़रमाएगा और न ही उन को पाक करेगा, और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।

أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ
بِالْهُدٰى وَالْعَذَابَ بِالْمَغْفِرَةِ ۚ
فَمَآ اَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ ﴿١٧٥﴾

175. येही वोह लोग हैं जिन्हों ने हिदायत के बदले गुमराही ख़रीदी और मग़्फ़िरत के बदले अ़ज़ाब, किस चीज़ नें उन्हें (दोज़ख़ की) आग पर सब्र करने वाला बना दिया है।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ نَزَّلَ الْكِتٰبَ
بِالْحَقِّ ؕ وَ اِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا
فِي الْكِتٰبِ لَفِيْ شِقَاقٍ بَعِيْدٍ ﴿١٧٦﴾ ع ٢١ ع ٥

176. येह इस वजह से है कि अल्लाह ने किताब ह़क़ के साथ नाज़िल फ़रमाई, और बेशक जिन्हों ने किताब में इख़्तिलाफ़ डाला वोह मुख़ालिफ़त में (ह़क़ से) बहुत दूर जा पड़े हैं।

لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ
الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ
بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ
وَالْكِتٰبِ وَالنَّبِيّٖنَ ۚ وَاٰتَى الْمَالَ عَلٰى
حُبِّهٖ ذَوِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنَ
وَ ابْنَ السَّبِيْلِ ۙ وَالسَّآئِلِيْنَ وَ فِي
الرِّقَابِ ۚ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ ۚ
وَ الْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا ۚ
وَالصّٰبِرِيْنَ فِي الْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ
وَحِيْنَ الْبَاْسِ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
صَدَقُوْا ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿١٧٧﴾

177. नेकी सिर्फ़ येही नहीं कि तुम अपने मुंह मशरिक़ और मग़रिब की तरफ़ फेर लो बल्कि अस्ल नेकी तो येह है कि कोई शख़्स अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर और फ़रिश्तों पर और (अल्लाह की) किताब पर और पयगंबरों पर ईमान लाए, और अल्लाह की मह़ब्बत में (अपना) माल क़राबतदारों पर और यतीमों पर और मोह़ताजों पर और मुसाफ़िरों पर और मांगनेवालों पर और (गुलामों की) गरदनों (को आज़ाद कराने) में ख़र्च करे, और नमाज़ क़ाइम करे और ज़कात दे और जब कोई वा'दा करें तो अपना वा'दा पूरा करने वाले हों, और सख़्ती (तंगदस्ती) में और मुसीबत (बीमारी) में और जंग की शिद्दत (जिहाद) के वक़्त सब्र करनेवाले हों, येही लोग सच्चे हैं और येही परहेज़गार हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ
الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلٰى ؕ اَلْحُرُّ بِالْحُرِّ
وَ الْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْاُنْثٰى

178. ऐ ईमानवालो ! तुम पर उनके ख़ून का बदला (क़िसास) फ़र्ज़ किया गया है जो ना ह़क़ क़त्ल किए जाएं, आज़ाद के बदले आज़ाद और गुलाम के बदले गुलाम और औ़रत के बदले औ़रत, फिर अगर उस को

بِالْاُنْثٰى ؕ فَمَنْ عُفِیَ لَهٗ مِنْ اَخِیْهِ
شَیْءٌ فَاتِّبَاعٌۢ بِالْمَعْرُوْفِ وَاَدَآءٌ
اِلَیْهِ بِاِحْسَانٍ ؕ ذٰلِكَ تَخْفِیْفٌ
مِّنْ رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ؕ فَمَنِ اعْتَدٰی
بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿۱۷۸﴾

(या'नी क़ातिल को) उस के भाई (या'नी मक़्तूल के वारिस) की तरफ़ से कुछ (या'नी क़िसास) मुआफ़ कर दिया जाए तो चाहिये कि भले दस्तूर के मुवाफ़िक़ पैरवी की जाए और (ख़ून बहा को) अच्छे तरीक़े से उस (मक़्तूल के वारिस) तक पहुंचा दिया जाए, येह तुम्हारे रब की तरफ़ से रिआयत और महरबानी है, पस जो कोई इस के बा'द ज़ियादती करे तो उस के लिए दर्दनाक अज़ाब है।

وَلَكُمْ فِی الْقِصَاصِ حَیٰوةٌ یّٰۤاُولِی
الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۷۹﴾

179. और तुम्हारे लिए क़िसास (या'नी ख़ून का बदला लेने) में ही ज़िन्दगी (की ज़मानत) है। ऐ अक़्लमन्द लोगो ! ताकि तुम (ख़ूंरेज़ी और बरबादी से) बचो।

كُتِبَ عَلَیْكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ
الْمَوْتُ اِنْ تَرَكَ خَیْرَا ۖۚ الْوَصِیَّةُ
لِلْوَالِدَیْنِ وَالْاَقْرَبِیْنَ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ
حَقًّا عَلَی الْمُتَّقِیْنَ ؕ﴿۱۸۰﴾

180. तुम पर फ़र्ज़ किया जाता है कि जब तुममें से किसी की मौत क़रीब आ पहुंचे अगर उस ने कुछ माल छोड़ा हो, तो अपने वालिदैन और क़रीबी रिश्तेदारों के हक़ में भले तरीक़े से वसिय्यत करे, येह परहेज़गारों पर लाज़िम है

فَمَنْۢ بَدَّلَهٗ بَعْدَ مَا سَمِعَهٗ فَاِنَّمَاۤ
اِثْمُهٗ عَلَی الَّذِیْنَ یُبَدِّلُوْنَهٗ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ؕ﴿۱۸۱﴾

181. फिर जिस शख़्स ने इस वसिय्यत को सुनने के बा'द उसे बदल दिया तो उस का गुनाह उन्ही बदलने वालों पर है । बेशक अल्लाह बड़ा सुननेवाला ख़ूब जाननेवाला है।

فَمَنْ خَافَ مِنْ مُّوْصٍ جَنَفًا اَوْ
اِثْمًا فَاَصْلَحَ بَیْنَهُمْ فَلَاۤ اِثْمَ
عَلَیْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۱۸۲﴾ ع

182. पस अगर किसी शख़्स को वसिय्यत करनेवाले से (किसी की) तरफ़दारी या (किसी के हक़में) ज़ियादती का अन्देशा हो फिर वोह उन के दरमियान सुलह़ करा दे तो उस पर कोई गुनाह नहीं, बेशक अल्लाह निहायत बख़्शनेवाला महरबान है।

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَیْكُمُ
الصِّیَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَی الَّذِیْنَ
مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۙ﴿۱۸۳﴾

183. ऐ ईमानवालो ! तुम पर इसी तरह रोज़े फ़र्ज़ किये गए हैं जैसे तुम से पहले लोगों पर फ़र्ज़ किये गए थे ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ।

أَيَّامًا مَّعْدُودٰتٍ ؕ فَمَنْ كَانَ
مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ
مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ وَعَلَى الَّذِيْنَ
يُطِيْقُوْنَهٗ فِدْيَةٌ طَعَامُ
مِسْكِيْنٍ ؕ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ
خَيْرٌ لَّهٗ ؕ وَاَنْ تَصُوْمُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ
اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸۴﴾

184. (येह) गिन्ती के चन्द दिन (हैं) पस अगर तुम में कोई बीमार हो या सफ़र पर हो तो दूसरे दिनों (के रोज़ों) से गिन्ती पूरी कर ले, और जिन्हें इस की ताक़त न हो उन के ज़िम्मे एक मिस्कीन के खाने का बदला है, फिर जो कोई अपनी ख़ुशी से (ज़ियादा) नेकी करे तो वोह उस के लिए बेहतर है, और तुम्हारा रोज़ा रख लेना तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम्हें समझ हो।

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ فِيْهِ
الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَ بَيِّنٰتٍ مِّنَ
الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ شَهِدَ
مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ؕ وَ مَنْ
كَانَ مَرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ
مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ يُرِيْدُ اللّٰهُ بِكُمُ
الْيُسْرَ وَ لَا يُرِيْدُ بِكُمُ الْعُسْرَ ۫ وَ
لِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى
مَا هَدٰىكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۸۵﴾

185. रमज़ान का महीना (वोह है) जिस में क़ुर्आन उतारा गया है जो लोगों के लिए हिदायत है और (जिसमें) रहनुमाई करनेवाली और (हक़्को बातिल में) इम्तियाज़ करनेवाली वाज़ेह निशानियां हैं, पस तुममें से जो कोई इस महीने को पा ले तो वोह इस के रोज़े ज़रूर रखखे और जो कोई बीमार हो या सफ़र पर हो तो दूसरे दिनों के रोज़ों से गिन्ती पूरी करे, अल्लाह तुम्हारे हक़ में आसानी चाहता है और तुम्हारे लिए दुश्वारी नहीं चाहता, और इस लिए कि तुम गिन्ती पूरी कर सको और इस लिए कि उस ने तुम्हें जो हिदायत फ़रमाई है उस पर उस की बड़ाई बयान करो और इस लिए कि तुम शुक्र गुज़ार बन जाओ।

وَ اِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ
قَرِيْبٌ ؕ اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا
دَعَانِ ۙ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِيْ وَلْيُؤْمِنُوْا
بِيْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ ﴿۱۸۶﴾

186. (और ऐ हबीब !) जब मेरे बन्दे आप से मेरी निस्बत सवाल करें तो (बता दिया करें कि) मैं नज़दीक हूं, मैं पुकारनेवाले की पुकार का जवाब देता हूं, जब भी वोह मुझे पुकारता है, पस उन्हें चाहिए कि मेरी फ़रमांबरदारी इख़्तियार करें और मुझ पर पुख़्ता यक़ीन रखखें ताकि वोह राहे (मुराद) पा जाएं।

أُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ إِلَىٰ
نِسَآئِكُمْ ۚ هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَأَنتُمْ
لِبَاسٌ لَّهُنَّ ۗ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ كُنتُمْ
تَخْتَانُونَ أَنفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ
وَعَفَا عَنكُمْ ۖ فَالْآنَ بَاشِرُوهُنَّ
وَابْتَغُوا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ ۚ وَكُلُوا
وَاشْرَبُوا حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ
الْأَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْأَسْوَدِ مِنَ
الْفَجْرِ ۖ ثُمَّ أَتِمُّوا الصِّيَامَ إِلَى اللَّيْلِ ۚ
وَلَا تُبَاشِرُوهُنَّ وَأَنتُمْ عَاكِفُونَ فِي
الْمَسَاجِدِ ۗ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا
تَقْرَبُوهَا ۗ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ آيَاتِهِ
لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿١٨٧﴾

187. तुम्हारे लिए रोज़ों की रातों में अपनी बीवियों के पास जाना ह़लाल कर दिया गया है वोह तुम्हारी पोशाक हैं और तुम उन की पोशाक हो, अल्लाह को मा'लूम है कि तुम अपने ह़क़ में ख़ियानत करते थे सो उस ने तुम्हारे ह़ाल पर रह़म किया और तुम्हें मुआ़फ़ फ़रमा दिया, पस अब (रोज़ों की रातों में बेशक) उनसे मुबाशिरत किया करो और जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दिया है चाहा करो और खाते पीते रहा करो यहां तक कि तुम पर सुब्ह़ का सफ़ेद डोरा (रात के) सियाह डोरे से (अलग हो कर) नुमायां हो जाए, फिर रोज़ह रात (की आमद) तक पूरा करो, और औ़रतों से इस दौरान शब बाशी न किया करो जब तुम मस्जिदों में ए'तिकाफ़ बैठे हो, येह अल्लाह की (क़ाइम कर्दह) हदें हैं पस उन (के तोड़ने) के नज़दीक न जाओ, इसी तरह़ अल्लाह लोगों के लिए अपनी आयतें (खोल कर) बयान फ़रमाता है ताकि वोह परहेज़गारी इख़्तियार करें।

وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُم بَيْنَكُم
بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوا بِهَا إِلَى الْحُكَّامِ
لِتَأْكُلُوا فَرِيقًا مِّنْ أَمْوَالِ النَّاسِ
بِالْإِثْمِ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٨٨﴾ ع ٢٣ ٦ ٧

188. और तुम एक दूसरे के माल आपस में नाह़क़ न खाया करो और न माल को (बतौरे रिश्वत) ह़ाकिमों तक पहुंचाया करो कि यूं लोगों के माल का कुछ ह़िस्सा तुम (भी) ना जाइज़ तरीक़े से खा सको हालांकि तुम्हारे इ़ल्म में हो (कि येह गुनाह है)।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْأَهِلَّةِ ۖ قُلْ هِيَ
مَوَاقِيتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ ۗ وَلَيْسَ
الْبِرُّ بِأَن تَأْتُوا الْبُيُوتَ مِن

189. (ऐ ह़बीब !) लोग आप से नए चांदों के बारे में दर्याफ़्त करते हैं, फ़रमा दें येह लोगों के लिए और माहे ह़ज्ज (तअ़य्युन) के लिए वक़्त की अ़लामतें हैं, और येह कोई नेकी नहीं कि तुम (ह़ालते एह़राम में) घरों में उन

ظُهُوْرِهَا وَ لٰكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقٰى ۚ وَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ اَبْوَابِهَا ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۱۸۹﴾

की पुश्त की तरफ़ से आओ बल्कि नेकी तो (ऐसी उल्टी रस्मों की बजाए) परहेज़गारी इख़्तियार करना है, और तुम घरों में उन के दरवाज़ों से आया करो, और अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम फ़लाह पाओ।

وَ قَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَ لَا تَعْتَدُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿۱۹۰﴾

190. और अल्लाह की राह में उन से जंग करो जो तुम से जंग करते हैं (हां) मगर ह़द से न बढ़ो, बेशक अल्लाह ह़द से बढ़नेवालों को पसन्द नहीं फ़रमाता।

وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَ اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ حَيْثُ اَخْرَجُوْكُمْ وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَ لَا تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ فِيْهِ ۚ فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ فَاقْتُلُوْهُمْ ؕ كَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۹۱﴾

191. और (दौराने जंग) उन (काफ़िरों) को जहां भी पाओ मार डालो और उन्हें वहां से बाहर निकाल दो जहां से उन्हों ने तुम्हें निकाला था और फ़ित्ना अंगेज़ी तो क़त्ल से भी ज़ियादह सख़्त (जुर्म) है और उन से मस्जिदे ह़राम (ख़ानए का'बा) के पास जंग न करो जब तक वोह ख़ुद तुम से वहां जंग न करें, फिर अगर वोह तुम से क़िताल करें तो उन्हें क़त्ल कर डालो, (ऐसे) काफ़िरों की येही सज़ा है।

فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۹۲﴾

192. फिर अगर वोह बाज़ आ जाएं तो बेशक अल्लाह निहायत बख़्शनेवाला महरबान है।

وَ قٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِ ؕ فَاِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ اِلَّا عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۹۳﴾

193. और उन से जंग करते रहो हत्ता कि कोई फ़ित्ना बाक़ी न रहे और दीन (या'नी ज़िन्दगी और बन्दगी का निज़ाम अ़-मलन) अल्लाह ही के ताबे' हो जाए, फिर अगर वोह बाज़ आ जाएं तो सिवाए ज़ालिमों के किसी पर ज़ियादती रवा नहीं।

اَلشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ ؕ فَمَنِ اعْتَدٰى

194. हुर्मतवाले महीने के बदले हुर्मतवाला महीना है और (दीगर) हुर्मतवाली चीज़ें एक दूसरे का बदल हैं।

عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوْا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا
اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ
اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩٤﴾

पस अगर तुम पर कोई ज़ियादती करे तुम भी उस पर ज़ियादती करो मगर उसी क़दर जित्नी उस ने तुम पर की और अल्लाह से डरते रहो और जान लो कि अल्लाह डरनेवालों के साथ है।

وَ اَنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ لَا تُلْقُوْا
بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۛ وَ اَحْسِنُوْا ۛ مع
اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٩٥﴾

195. और अल्लाह की राह में ख़र्च करो और अपने ही हाथों खुद को हलाकत में न डालो, और नेकी इख़्तियार करो, बेशक अल्लाह नेकूकारों से मुहब्बत फ़रमाता है।

وَ اَتِمُّوا الْحَجَّ وَ الْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ؕ فَاِنْ
اُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ
وَ لَا تَحْلِقُوْا رُءُوْسَكُمْ حَتّٰى يَبْلُغَ
الْهَدْيُ مَحِلَّهٗ ؕ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ
مَّرِيْضًا اَوْ بِهٖۤ اَذًى مِّنْ رَّاْسِهٖ
فَفِدْيَةٌ مِّنْ صِيَامٍ اَوْ صَدَقَةٍ اَوْ
نُسُكٍ ۚ فَاِذَاۤ اَمِنْتُمْ ۥ وقفة فَمَنْ تَمَتَّعَ
بِالْعُمْرَةِ اِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ
الْهَدْيِ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ
ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَ سَبْعَةٍ اِذَا
رَجَعْتُمْ ؕ تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ؕ
ذٰلِكَ لِمَنْ لَّمْ يَكُنْ اَهْلُهٗ حَاضِرِي
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ وَ
اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿١٩٦﴾ ع ٢٤ ٨

196. और हज्ज और उ़मरह (के मनासिक) अल्लाह के लिए मुकम्मल करो, फिर अगर तुम (रास्ते में) रोक लिए जाओ तो जो कुरबानी भी मुयस्सर आए (करने के लिए भेज दो) और अपने सरों को उस वक़्त तक न मुंडवाओ जब तक कुरबानी (का जानवर) अपने मुक़ाम पर न पहुंच जाए, फिर तुम में से जो कोई बीमार हो या उस के सर में कुछ तक्लीफ़ हो (इस वजह से क़ब्ल अज़ वक़्त सर मुंडवा ले) तो (उस के बदले) में रोज़े (रखे) या सदक़ह (दे) या कुरबानी (करे) फिर जब तुम इत्मीनान की हालत में हो तो जो कोई उ़मरह को हज के साथ मिलाने का फ़ाइदह उठाए तो जो भी क़ुरबानी मुयस्सर आए (कर दे), फिर जिसे येह भी मुयस्सर न हो वोह तीन दिन के रोज़े (ज़मानए) हज में रखे और सात जब तुम हज से वापस लौटो, येह पूरे दस (रोज़े) हुए, येह (रिआ़यत) उस के लिए है जिस के अहलो अ़याल मस्जिदे ह़राम के पास न रेहते हों। (या'नी जो मक्का का रेहने वाला न हो), और अल्लाह से डरते रहो और जान लो कि अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है।

اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمٰتٌ ۚ فَمَنْ
فَرَضَ فِيْهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا
فُسُوْقَ ۙ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ ؕ وَمَا
تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ يَّعْلَمْهُ اللّٰهُ ؕ
وَتَزَوَّدُوْا فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى ۫
وَاتَّقُوْنِ يٰۤاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿۱۹۷﴾

197. हज के चन्द महीने मुअ़य्यन हैं (या'नी शव्वाल, ज़ुल का'दह और अ़शरए ज़िल हिज्जा) तो जो शख़्स इन (महीनों) में निय्यत कर के (अपने ऊपर) हज लाज़िम कर ले तो हज के दिनों में न औ़रतों से इख़्तिलात करे और न कोई (और) गुनाह और न ही किसी से झगड़ा करे, और तुम जो भलाई भी करो अल्लाह उसे ख़ूब जानता है, और (आख़िरत के) सफ़र का सामान कर लो बेशक सब से बेहतर ज़ादे राह तक़्वा है और ऐ अक़्लवालो ! मेरा तक़्वा इख़्तियार करो।

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَبْتَغُوْا
فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ فَاِذَاۤ اَفَضْتُمْ
مِّنْ عَرَفٰتٍ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ
الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۪ وَاذْكُرُوْهُ كَمَا
هَدٰىكُمْ ۚ وَاِنْ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلِهٖ
لَمِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿۱۹۸﴾

198. और तुम पर इस बात में कोई गुनाह नहीं अगर तुम (ज़मानए हज में तिजारत के ज़रीए) अपने रब का फ़ज़्ल (भी) तलाश करो फिर जब तुम अ़-रफ़ात से वापस आओ तो मश्अ़रे हराम (मुज़्दलिफ़ा) के पास अल्लाह का ज़िक्र किया करो और उस का ज़िक्र इस तरह करो जैसे उस ने तुम्हें हिदायत फ़रमाई, और बेशक इस से पहले तुम भटके हुए थे।

ثُمَّ اَفِيْضُوْا مِنْ حَيْثُ اَفَاضَ
النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۹۹﴾

199. फिर तुम वहीं से जा कर वापस आया करो जहां से (और) लोग वापस आते हैं और अल्लाह से (ख़ूब) बख़्शिश तलब करो, बेशक अल्लाह निहायत बख़्शनेवाला महरबान है।

فَاِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا
اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ
ذِكْرًا ؕ فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ
رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهٗ فِي
الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ﴿۲۰۰﴾

200. फिर जब तुम अपने हज के अर्कान पूरे कर चुको तो (मिना में) अल्लाह का ख़ूब ज़िक्र किया करो जैसे तुम अपने बापदादा का (बड़े शौक़ से) ज़िक्र करते हो या उस से भी ज़ियादह शिद्दते शौक़ से (अल्लाह का) ज़िक्र किया करो, फिर लोगों में से कुछ ऐसे भी हैं जो केहते हैं : ऐ हमारे रब हमें दुन्या में (ही) अ़ता कर दे और ऐसे शख़्स के लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं है।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي
الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِي الْاٰخِرَةِ
حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿٢٠١﴾

201. और उन्ही में से ऐसे भी हैं जो अ़र्ज़ करते हैं : "ऐ हमारे परवरदिगार ! हमें दुन्या में (भी) भलाई अ़ता फ़रमा और आख़िरत में (भी) भलाई (से नवाज़) और हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रख।

النصف

اُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ
وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٢٠٢﴾

202. येही वोह लोग हैं जिन के लिए उन की (नेक) कमाई में से हिस्सा है, और अल्लाह जल्द हिसाब करने वाला है।

وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ
فَمَنْ تَعَجَّلَ فِيْ يَوْمَيْنِ فَلَآ اِثْمَ
عَلَيْهِ ۚ وَمَنْ تَاَخَّرَ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۙ
لِمَنِ اتَّقٰى ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا
اَنَّكُمْ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٠٣﴾

203. और अल्लाह को (उन) गिन्ती के चन्द दिनों में (ख़ूब) याद किया करो, फिर जिस किसी ने (मिनासे वापसी में) दो ही दिनों में जल्दी की तो उस पर कोई गुनाह नहीं और जिस ने (इस में) ताख़ीर की तो उस पर भी कोई गुनाह नहीं, येह उस के लिए है जो परहेज़गारी इख़्तियार करे, और अल्लाह से डरते रहो और जान लो कि तुम सब को उसी के पास जमा' किया जाएगा।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ فِي
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللّٰهَ عَلٰى مَا
فِيْ قَلْبِهٖ ۙ وَهُوَ اَلَدُّ الْخِصَامِ ﴿٢٠٤﴾

204. और लोगों में कोई शख़्स ऐसा भी (होता) है कि जिस की गुफ़्तुगू दुन्यावी ज़िन्दगी में तुझे अच्छी लगती है और वोह अल्लाह को अपने दिल की बात पर गवाह भी बनाता है, हालांकि वोह सब से ज़ियादह झगड़ालू है।

وَ اِذَا تَوَلّٰى سَعٰى فِي الْاَرْضِ
لِيُفْسِدَ فِيْهَا وَ يُهْلِكَ الْحَرْثَ
وَالنَّسْلَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ ﴿٢٠٥﴾

205. और जब वोह (आप से) फिर जाता है तो ज़मीन में (हर मुम्किन) भाग दौड़ करता है ता कि उस में फ़साद अंगेज़ी करे और खेतियां और जानें तबाह कर दे, और अल्लाह फ़साद को पसन्द नहीं फ़रमाता।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ
الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ ؕ
وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿٢٠٦﴾

206. और जब उसे इस (जुल्मो फ़साद पर) कहा जाए कि अल्लाह से डरो तो उस का ग़ुरूर उसे मज़ीद गुनाह पर उक्साता है, पस उस के लिए जहन्नम काफ़ी है और वोह यक़ीनन बुरा ठिकाना है।

وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِيْ نَفْسَهُ

207. और (इस के बर अ़क्स) लोगों में कोई शख़्स ऐसा

ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ؕ وَ اللّٰهُ
رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠٧﴾

भी होता है जो अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए अपनी जान भी बेच डालता है, और अल्लाह बन्दों पर बड़ी महरबानी फ़रमानेवाला है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا فِى
السِّلْمِ كَآفَّةً ۪ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ
الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٢٠٨﴾

208. ऐ ईमानवालो ! इस्लाम में पूरे पूरे दाख़िल हो जाओ, और शैतान के रास्तों पर न चलो, बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

فَاِنْ زَلَلْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْكُمُ
الْبَيِّنٰتُ فَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ
حَكِيْمٌ ﴿٢٠٩﴾

209. पस अगर तुम इस के बा'द भी लग्ज़िश करो जब कि तुम्हारे पास वाज़ेह़ निशानियां आ चुकीं तो जान लो कि अल्लाह बहुत ग़ालिब बड़ी हिक्मतवाला है।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّاۤ اَنْ يَّاْتِيَهُمُ اللّٰهُ فِىْ
ظُلَلٍ مِّنَ الْغَمَامِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَقُضِىَ
الْاَمْرُ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿٢١٠﴾ ع ٢٥ ١٤ ٩

210. क्या वोह इसी बात के मुन्तज़िर हैं कि बादल के साइबानों में अल्लाह (का अ़ज़ाब) आ जाए और फ़रिश्ते भी (नीचे उतर आएं) और (सारा) क़िस्सा तमाम हो जाए, तो सारे काम अल्लाह ही की तरफ़ लौटाए जाएंगे।

سَلْ بَنِىْۤ اِسْرَآءِيْلَ كَمْ اٰتَيْنٰهُمْ
مِّنْ اٰيَةٍۢ بَيِّنَةٍ ؕ وَ مَنْ يُّبَدِّلْ
نِعْمَةَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُ
فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢١١﴾

211. आप बनी इसराईल से पूछ लें कि हम ने उन्हें कितनी वाज़ेह़ निशानियां अ़ता की थीं, और जो शख़्स अल्लाह की ने'मत को अपने पास आजाने के बा'द बदल डाले तो बेशक अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है।

زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ
الدُّنْيَا وَ يَسْخَرُوْنَ مِنَ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا ۘ وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ وقف لازم
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَ اللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ
يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢١٢﴾

212. काफ़िरों के लिए दुनिया की ज़िन्दगी खूब आरास्तह कर दी गई है और वोह ईमानवालों से तमस्ख़ुर करते हैं, और जिन्हों ने तक़्वा इख़्तियार किया वोह क़ियामत के दिन उन पर सर बुलन्द होंगे, और अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब नवाज़ता है।

كَانَ النَّاسُ أُمَّةً وَّاحِدَةً ۟ فَبَعَثَ
اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ مُبَشِّرِيْنَ وَ
مُنْذِرِيْنَ ۪ وَاَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتٰبَ
بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا
اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا
الَّذِيْنَ اُوْتُوْهُ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ
الْبَيِّنٰتُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ۚ فَهَدَى اللّٰهُ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ
الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ ؕ وَ اللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ
يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۲۱۳﴾

213. (इब्तिदा में) सब लोग एक ही दीन पर जमा' थे, (फिर जब उन में इख़्तिलाफ़ात रूनुमा हो गए) तो अल्लाहने बशारत देने वाले और डर सुनानेनवाले पयग़ंबरों को भेजा, और उन के साथ हक़ पर मब्नी किताब उतारी ताकि वोह लोगों में उन उमूर का फ़ैसला कर दे जिन में वोह इख़्तिलाफ़ करने लगे थे और उस में इख़्तिलाफ़ भी फ़क़त उन्ही लोगों ने किया जिन्हें वोह किताब दी गई थी, बावजूद इस के कि उन के पास वाज़ेह निशानियां आ चुकी थीं । (और उन्हों ने येह इख़्तिलाफ़ भी) महज़ बाहमी बुग़्ज़ो हसद के बाइस (किया) फिर अल्लाहने ईमानवालों को अपने हुक्म से वोह हक़ की बात समझा दी जिस में वोह इख़्तिलाफ़ करते थे, और अल्लाह जिसे चाहता है सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत फ़रमा देता है।

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَ
لَمَّا يَاْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا
مِنْ قَبْلِكُمْ ؕ مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَآءُ
وَالضَّرَّآءُ وَ زُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ
الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى
نَصْرُ اللّٰهِ ؕ اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ
قَرِيْبٌ ﴿۲۱۴﴾

214. क्या तुम येह गुमान करते हो कि तुम (यूंही बिला आज़माइश) जन्नत में दाख़िल हो जाओगे हालांकि तुम पर तो अभी उन लोगों जैसी हालत (ही) नहीं बीती जो तुम से पहले गुज़र चुके, उन्हें तो तरह तरह की सख़्तियां और तक्लीफें पहुंचीं और उन्हें (इस तरह) हिला डाला गया कि (खुद) पयग़म्बर और उन के ईमान वाले साथी (भी) पुकार उठे कि अल्लाह की मदद कब आएगी ? आगाह हो जाओ कि बेशक अल्लाह की मदद क़रीब है।

يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ۬ؕ قُلْ مَآ
اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ
وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ

215. आप से पूछते हैं कि (अल्लाह की राह में) क्या ख़र्च करें? फ़रमा दें : जिस क़दर भी माल ख़र्च करो (दुरुस्त है), मगर उस के हक़दार तुम्हारे मांबाप हैं और क़रीबी रिश्तेदार हैं और यतीम हैं और मोहताज हैं और मुसाफ़िर

وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ وَ مَا تَفْعَلُوْا مِنْ
خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿۲۱۵﴾
كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَ هُوَ كُرْهٌ
لَّكُمْ ۚ وَعَسٰۤى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّ
هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰۤى اَنْ تُحِبُّوْا
شَيْـًٔا وَّ هُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ يَعْلَمُ وَ
اَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۱۶﴾ ع ۲۶ ۱۰
يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ
فِيْهِ ؕ قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ؕ وَ صَدٌّ
عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ كُفْرٌۢ بِهٖ وَ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ ۗ وَ اِخْرَاجُ اَهْلِهٖ مِنْهُ اَكْبَرُ
عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَ الْفِتْنَةُ اَكْبَرُ مِنَ
الْقَتْلِ ؕ وَ لَا يَزَالُوْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ
حَتّٰى يَرُدُّوْكُمْ عَنْ دِيْنِكُمْ اِنِ
اسْتَطَاعُوْا ؕ وَ مَنْ يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ
دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَ هُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓئِكَ
حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ ۚ
وَ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا
خٰلِدُوْنَ ﴿۲۱۷﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ الَّذِيْنَ

हैं, और जो नेकी भी तुम करते हो बेशक अल्लाह उसे ख़ूब जाननेवाला है।

216. (अल्लाह की राह में) क़िताल तुम पर फ़र्ज़ कर दिया गया है हालांकि वोह तुम्हें तब्अ़न ना गवार है, और मुम्किन है तुम किसी चीज़ को नापसंद करो और वोह (ह़क़ीक़तन) तुम्हारे लिए बेहतर हो और (येह भी) मुम्किन है कि तुम किसी चीज़ को पसंद करो और वोह (ह़क़ीक़तन) तुम्हारे लिए बुरी हो, और अल्लाह ख़ूब जानता है और तुम नहीं जानते।

217. लोग आप से हुर्मत वाले महीने में जंग का हुक्म दर्याफ़्त करते हैं, फ़रमा दें, इस में जंग बड़ा गुनाह है और अल्लाह की राह से रोकना और उस से कुफ़्र करना और मस्जिदे ह़राम (ख़ानए का'बा) से रोकना और वहां के रेहनेवालों को वहां से निकालना अल्लाह के नज़दीक (इस से भी) बड़ा गुनाह है, और येह फ़ित्ना अंगेज़ी क़त्लो ख़ून से भी बढ़ कर है और (येह काफ़िर) तुम से हमेशा जंग जारी रखेंगे। यहां तक कि तुम्हें तुम्हारे दीन से फेर दें अगर (वोह इतनी) ताक़त पा सकें और तुम में से जो शख़्स अपने दीन से फिर जाए और फिर वोह काफ़िर ही मरे तो ऐसे लोगों के दुनिया व आख़िरत में (सब) आ'माल बरबाद हो जाएंगे, और येही लोग जहन्नमी हैं वोह उसमें हमेशा रहेंगे।

218. बेशक जो लोग ईमान लाए और जिन्हों ने अल्लाह

هَاجَرُوْا وَ جٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ
اُولٰٓئِكَ يَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللّٰهِ ؕ وَ
اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۲۱۸﴾

के लिए वतन छोड़ा और अल्लाह की राह में जिहाद किया, येही लोग अल्लाह की रह़मत के उम्मीदवार हैं। और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला महरबान है।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَ الْمَيْسِرِ ؕ قُلْ
فِيْهِمَآ اِثْمٌ كَبِيْرٌ وَّ مَنَافِعُ لِلنَّاسِ ز
وَ اِثْمُهُمَآ اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا ؕ
وَ يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ۬ ؕ قُلِ
الْعَفْوَ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ
الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ۙ﴿۲۱۹﴾

219. आप से शराब और जूए की निस्बत सवाल करते हैं फ़रमा दें : इन दोनों में बड़ा गुनाह है और लोगों के लिए कुछ दुन्यवी फ़ाइदे भी हैं मगर इन दोनों का गुनाह इन के नफ़े' से बढ़ कर है। और आप से येह भी पूछते हैं कि क्या कुछ ख़र्च करें ? फ़रमा दें : जो ज़रूरत से ज़ाइद है (ख़र्च कर दो), इसी तरह़ अल्लाह तुम्हारे लिए (अपने) अह़्काम खोल कर बयान फ़रमाता है ताकि तुम ग़ौरो फिक्र करो।

فِي الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ ؕ وَ يَسْـَٔلُوْنَكَ
عَنِ الْيَتٰمٰى ؕ قُلْ اِصْلَاحٌ لَّهُمْ
خَيْرٌ ؕ وَ اِنْ تُخَالِطُوْهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ ؕ
وَ اللّٰهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ؕ
وَ لَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَعْنَتَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۲۰﴾

220. (तुम्हारा ग़ौरो फ़िक्र) दुनिया और आख़िरत (दोनों के मुआ़मलात) में (रहे), और आप से यतीमों के बारे में दर्याफ़्त करते हैं, फ़रमा दें : उन (के मुआ़मलात) का संवारना बेहतर है, और अगर उन्हें (नफ़्क़ा -व-कारोबार में) अपने साथ मिला लो तो वोह भी तुम्हारे भाई हैं, और अल्लाह ख़राबी करनेवाले को भलाई करनेवाले से जुदा पहचानता है, और अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हें म-शक़्क़त में डाल देता, बेशक अल्लाह बड़ा ग़ालिब बड़ी ह़िक्मतवाला है।

وَ لَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ حَتّٰى
يُؤْمِنَّ ؕ وَ لَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ
مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَّ لَوْ اَعْجَبَتْكُمْ ۚ
وَ لَا تُنْكِحُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَتّٰى
يُؤْمِنُوْا ؕ وَ لَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ

221. और तुम मुश्रिक औ़रतों के साथ निकाह़ मत करो जब तक वोह मुसल्मान न हो जाएं, और बेशक मुसल्मान लौंडी (आज़ाद) मुश्रिक औ़रत से बेहतर है ख़्वाह वोह तुम्हें भली ही लगे और (मुसल्मान औ़रतों का) मुश्रिक मर्दों से भी निकाह़ न करो जब तक वोह मुसल्मान न हो जाएं, और यक़ीनन मुश्रिक मर्द से मोमिन गुलाम बेहतर है ख़्वाह वोह तुम्हें भला ही लगे,

مُّشْرِكٍ وَّ لَوْ اَعْجَبَكُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ يَدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۚۖ وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ بِاِذْنِهٖ ۚ وَيُبَيِّنُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۲۱﴾

वोह (काफ़िर और मुश्रिक) दोज़ख़ की तरफ़ बुलाते हैं, और अल्लाह अपने हुक्म से जन्नत और मग़फ़िरत की तरफ़ बुलाता है और अपनी आयतें लोगों के लिए खोल कर बयान फ़रमाता है ताकि वोह नसीह़त ह़ासिल करें।

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ ؕ قُلْ هُوَ اَذًى ۙ فَاعْتَزِلُوا النِّسَآءَ فِى الْمَحِيْضِ ۙ وَلَا تَقْرَبُوْهُنَّ حَتّٰى يَطْهُرْنَ ۚ فَاِذَا تَطَهَّرْنَ فَاْتُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ اَمَرَكُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ ﴿۲۲۲﴾

222. और आप से ह़ैज़ (अय्यामे माहवारी) की निस्बत सवाल करते हैं, फ़रमा दें, वोह नजासत है, सो तुम ह़ैज़ के दिनों में औ़रतों से कनारह कश रहा करो, और जब तक वोह पाक न हो जाएं उनके क़रीब न जाया करो, और जब वोह ख़ूब पाक हो जाएं तो जिस रास्ते से अल्लाह ने तुम्हें इजाज़त दी है उन के पास जाया करो, बेशक अल्लाह बहुत तौबा करनेवालों से मुह़ब्बत फ़रमाता है और ख़ूब पाकीज़गी इख़्तियार करनेवालों से मुह़ब्बत फ़रमाता है।

نِسَآؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ ۠ فَاْتُوْا حَرْثَكُمْ اَنّٰى شِئْتُمْ ۪ وَقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ مُّلٰقُوْهُ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۲۲۳﴾

223. तुम्हारी औ़रतें तुम्हारी खेतियां हैं पस तुम अपनी खेतियों जैसे चाहो आओ, और अपने लिए आइन्दह का कुछ सामान कर लो और तक़्वा इख़्तियार करो और जान लो कि तुम उस के ह़ुज़ूर पेश होने वाले हो, और (ऐ ह़बीब!) आप अह्ले ईमान को ख़ुश ख़बरी सुना दें (कि अल्लाह के ह़ुज़ूर उन की पेशी बेहतर रहेगी)।

وَلَا تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً لِّاَيْمَانِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْا وَتَتَّقُوْا وَتُصْلِحُوْا بَيْنَ النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۲۴﴾

224. और अपनी क़स्मो के बाइस अल्लाह(के नाम) को (लोगों के साथ) नेकी करने और परहेज़गारी इख़्तियार करने और लोगों में सुलह़ कराने में आड़ मत बनाओ, और अल्लाह ख़ूब सुनने वाला बड़ा जाननेवाल है।

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِىْٓ اَيْمَانِكُمْ

225. अल्लाह तुम्हारी बेहूदा क़स्मों पर तुम से मुवाख़िज़ह

وَ لٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ
قُلُوْبُكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿٢٢٥﴾
لِلَّذِيْنَ يُؤْلُوْنَ مِنْ نِّسَآئِهِمْ
تَرَبُّصُ اَرْبَعَةِ اَشْهُرٍ ۚ فَاِنْ
فَآءُوْ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٢٦﴾
وَاِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَاِنَّ اللّٰهَ
سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٢٧﴾
وَالْمُطَلَّقٰتُ يَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ
ثَلٰثَةَ قُرُوْٓءٍ ؕ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ اَنْ
يَّكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِيْٓ اَرْحَامِهِنَّ
اِنْ كُنَّ يُؤْمِنَّ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ
الْاٰخِرِ ؕ وَبُعُوْلَتُهُنَّ اَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ اِنْ اَرَادُوْٓا اِصْلَاحًا ؕ وَلَهُنَّ
مِثْلُ الَّذِيْ عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۪
وَ لِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ ؕ وَاللّٰهُ
عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٢٨﴾ ع ٢٨ ع ١٢
اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ۪ فَاِمْسَاكٌ بِمَعْرُوْفٍ
اَوْ تَسْرِيْحٌ بِاِحْسَانٍ ؕ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ
اَنْ تَاْخُذُوْا مِمَّآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ شَيْـًٔا
اِلَّآ اَنْ يَّخَافَآ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ

नहीं फ़रमाएगा मगर उन का ज़रूर मुवाख़िज़ह फ़रमाएगा जिन का तुम्हारे दिलों ने इरादह किया हो, और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला बहुत हिल्म वाला है।

226. और उन लोगों के लिए जो अपनी बीवियों के करीब न जाने की क़सम खा लें चार माह की मोहलत है पस अगर वोह (इस मुद्दत में) रुजूअ़ कर लें तो बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला महरबान है।

227. और अगर उन्हों ने तलाक़ का पुख़्ता इरादह कर लिया हो तो बेशक अल्लाह खूब सुननेवाला जाननेवाला है।

228. और तलाक़ याफ़्ता औ़रतें अपने आप को तीन हैज़ तक रोके रख्खें, और उन के लिए जाइज़ नहीं कि वोह उसे छुपाएं जो अल्लाहने उन के रह्मों में पैदा फ़रमा दिया हो, अगर वोह अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर ईमान रखती हैं, और इस मुद्दत के अंदर उन के शौहरों को उन्हें (फिर) अपनी ज़ौजिय्यत में लौटा लेने का ह़क़ ज़ियादह है अगर वोह इस्लाह़ का इरादह कर लें, और दस्तूर के मुताबिक़ औ़रतों के भी मर्दों पर इसी तरह़ के हुक़ूक़ हैं जैसे मर्दों के औ़रतों पर, अलबत्ता मर्दों को उन पर फ़ज़ीलत है, और अल्लाह बड़ा ग़ालिब बड़ी हिक्मतवाला है।

229. तलाक़ (सिर्फ़) दो बार (तक) है फिर या तो (बीवी को) अच्छे तरीक़े से (ज़ौजिय्यत में) रोक लेना है या भलाई के साथ छोड़ देना है, और तुम्हारे लिए जाइज़ नहीं कि जो चीज़ें तुम उन्हें दे चुके हो उस में से कुछ वापस लो सिवाए इस के कि दोनों को अंदेशा हो कि (अब

اللّٰهِ ؕ فَاِنۡ خِفۡتُمۡ اَلَّا يُقِيۡمَا حُدُوۡدَ
اللّٰهِ ۙ فَلَا جُنَاحَ عَلَيۡهِمَا فِيۡمَا افۡتَدَتۡ
بِهٖ ؕ تِلۡكَ حُدُوۡدُ اللّٰهِ فَلَا
تَعۡتَدُوۡهَا ۚ وَمَنۡ يَّتَعَدَّ حُدُوۡدَ اللّٰهِ
فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوۡنَ ﴿۲۲۹﴾

रिश्तए ज़ौजिय्यत बरक़रार रखते हुए) दोनों अल्लाह की हुदूद को क़ाइम न रख सकेंगे, फिर अगर तुम्हें अंदेशा हो कि दोनों अल्लाह की हुदूद को क़ाइम न रख सकेंगे, सो (अंदरीं सूरत) उन पर कोई गुनाह नहीं कि बीवी (खुद) कुछ बदला दे कर (इस तक्लीफ़ देह बंधन से) आज़ादी ले ले येह अल्लाह की (मुक़र्रर की हुई) हदें हैं, पस तुम इन से आगे मत बढ़ो और जो लोग अल्लाह की हुदूद से तजावुज़ करते हैं सो वोही लोग ज़ालिम हैं।

فَاِنۡ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنۡۢ بَعۡدُ
حَتّٰى تَنۡكِحَ زَوۡجًا غَيۡرَهٗ ؕ فَاِنۡ
طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيۡهِمَاۤ اَنۡ
يَّتَرَاجَعَاۤ اِنۡ ظَنَّاۤ اَنۡ يُّقِيۡمَا
حُدُوۡدَ اللّٰهِ ؕ وَتِلۡكَ حُدُوۡدُ اللّٰهِ
يُبَيِّنُهَا لِقَوۡمٍ يَّعۡلَمُوۡنَ ﴿۲۳۰﴾

230. फिर अगर उस ने (तीसरी मर्तबा) तलाक़ दे दी तो इसके बाद वोह उसके लिए ह़लाल न होगी यहां तक कि वोह किसी और शौहर के साथ निकाह़ कर ले, फिर अगर वोह दूसरा शौहर भी तलाक़ दे दे तो अब इन दोनों (या'नी पहले शौहर और इस औ़रत) पर कोई गुनाह न होगा अगर वोह (दोबारह रिश्तए ज़ौजिय्यत में) पलट जाएं ब शर्ते कि दोनों येह ख़याल करें कि (अब) वोह हुदूदे इलाही क़ाइम रख सकेंगे, येह अल्लाह की (मुक़र्रर कर्दह) हुदूद हैं जिन्हें वोह इल्मवालों के लिए बयान फ़रमाता है।

وَ اِذَا طَلَّقۡتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغۡنَ
اَجَلَهُنَّ فَاَمۡسِكُوۡهُنَّ بِمَعۡرُوۡفٍ
اَوۡ سَرِّحُوۡهُنَّ بِمَعۡرُوۡفٍ ۪ وَّ لَا
تُمۡسِكُوۡهُنَّ ضِرَارًا لِّتَعۡتَدُوۡا ۚ وَ
مَنۡ يَّفۡعَلۡ ذٰلِكَ فَقَدۡ ظَلَمَ
نَفۡسَهٗ ؕ وَ لَا تَتَّخِذُوۡۤا اٰيٰتِ اللّٰهِ
هُزُوًا ۟ وَّ اذۡكُرُوۡا نِعۡمَتَ اللّٰهِ

231. और जब तुम औ़रतों को तलाक़ दो और वोह अपनी इद्दत (पूरी होने को)आ पहुंचें तो उन्हें अच्छे तरीके से अपनी ज़ौजिय्यत में रोक लो या उन्हें अच्छे तरीक़े से छोड़ दो, और उन्हें मह़ज़ तकलीफ़ देने के लिए न रोके रख्खो कि (उन पर) ज़ियादती करते रहो और जो कोई ऐसा करे पस उस ने अपनी ही जान पर जुल्म किया, और अल्लाह के अह़्काम को मज़ाक़ न बना लो, और याद करो अल्लाह की उस ने'मत को जो तुम पर(की गई) है और उस किताब को जो उस ने तुम पर नाज़िल फ़रमाई है और

عَلَيْكُمْ وَ مَآ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنَ
الْكِتٰبِ وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ وَ
اتَّقُوا اللّٰهَ وَ اعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٢٣١﴾ ع

दानाई (की बातों)को (जिन की उस ने तुम्हें ता'लीम दी है) वोह तुम्हें (इस अम्र की) नसीहत फ़रमाता है, और अल्लाह से डरो और जान लो कि बेशक अल्लाह सब कुछ जाननेवाला है।

وَ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ
اَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ اَنْ
يَّنْكِحْنَ اَزْوَاجَهُنَّ اِذَا تَرَاضَوْا
بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ ذٰلِكَ يُوْعَظُ بِهٖ
مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
الْاٰخِرِ ؕ ذٰلِكُمْ اَزْكٰى لَكُمْ وَ اَطْهَرُ ؕ
وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٢﴾

232. और जब तुम औ़रतों को तलाक़ दो और वोह अपनी इ़द्दत (पूरी होने को) आ पहुंचें तो जब वोह शरई़ दस्तूर के मुताबिक़ बाहम रज़ा मन्द हो जाएं तो उन्हें अपने (पुराने या नए) शौहरों से निकाह़ करने से मत रोको, उस शख़्स को इस अम्र की नसीह़त की जाती है जो तुम में से अल्लाह पर और यौमे क़ियामत पर ईमान रखता हो, येह तुम्हारे लिए बहुत सुथरी और निहायत पाकीज़ा बात है, और अल्लाह जानता है और तुम (बहुत सी बातों को) नहीं जानते।

وَ الْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ
حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ اَرَادَ اَنْ
يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ ؕ وَعَلَى الْمَوْلُوْدِ لَهٗ
رِزْقُهُنَّ وَ كِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ
لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ اِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَا
تُضَآرَّ وَالِدَةٌۢ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُوْدٌ
لَّهٗ بِوَلَدِهٖ ۚ وَعَلَى الْوَارِثِ مِثْلُ
ذٰلِكَ ۚ فَاِنْ اَرَادَا فِصَالًا عَنْ
تَرَاضٍ مِّنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ

233. और माएं अपने बच्चों को पूरे दो बरस तक दूध पिलाएं येह (हुक्म) उस के लिए है जो दूध पिलाने की मुद्दत पूरी करना चाहे, और दूध पिलानेवाली माओं का खाना और पहनना दस्तूर के मुताबिक बच्चे के बाप पर लाज़िम है, किसी जान को उस की ताक़त से बढ़ कर तक्लीफ़ न दी जाए,(और) न मां को उस के बच्चे के बाइ़स नुक़्सान बहुंचाया जाए और न बाप को उस की औलाद के सबब से, और वारिसों पर भी येही हुक्म आइद होगा, फिर अगर माँ-बाप दोनों बाहमी रज़ामन्दी और मश्वरे से (दो बरस से पहले ही) दूध छुड़ाना चाहें तो उन पर कोई गुनाह नहीं और फिर अगर तुम अपनी औलाद को (दाया) से दूध पिलवाने का इरादा रखते हो तब भी

عَلَيْهِمَا ۗ وَ اِنْ اَرَدْتُّمْ اَنْ
تَسْتَرْضِعُوْٓا اَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ
عَلَيْكُمْ اِذَا سَلَّمْتُمْ مَّآ اٰتَيْتُمْ
بِالْمَعْرُوْفِ ۗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا
اَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٣٣﴾

तुम पर कोई गुनाह नहीं जब कि जो तुम दस्तूर के मुताबिक़ देते हो उन्हें अदा कर दो, और अल्लाह से डरते रहो और येह जान लो कि बेशक जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे ख़ूब देखनेवाला है।

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ
اَزْوَاجًا يَّتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ
اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا ۚ فَاِذَا بَلَغْنَ
اَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا
فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۗ وَ
اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٣٤﴾

234. और तुम में से जो फ़ौत हो जाएं और (अपनी) बीवियां छोड़ जाएं तो वोह अपने आप को चार माह दस दिन इन्तिज़ार में रोके रख्खें, फिर जब वोह अपनी इद्दत (पूरी होने) को आ पहुंचें तो फिर जो कुछ वोह शरई दस्तूर के मुताबिक़ अपने हक में करें तुम पर इस मुआमले में कोई मुवाख़ज़ा नहीं, और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उस से अच्छी तरह ख़बरदार है।

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا عَرَّضْتُمْ
بِهٖ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَآءِ اَوْ اَكْنَنْتُمْ
فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ ۗ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ
سَتَذْكُرُوْنَهُنَّ وَ لٰكِنْ لَّا
تُوَاعِدُوْهُنَّ سِرًّا اِلَّآ اَنْ تَقُوْلُوْا
قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۬ۗ وَلَا تَعْزِمُوْا عُقْدَةَ
النِّكَاحِ حَتّٰى يَبْلُغَ الْكِتٰبُ اَجَلَهٗ ۗ
وَ اعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِيْٓ
اَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوْهُ ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ
اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿٢٣٥﴾ ع ٣٠ ١٤

235. और तुम पर इस बात में कोई गुनाह नहीं कि(दौराने इद्दत भी) उन औरतों को इशारतन निकाह का पैग़ाम दे दो या (येह ख़याल) अपने दिलों में छुपा रख्खो, अल्लाह जानता है कि तुम अनक़रीब उन से ज़िक्र करोगे मगर उन से ख़ुफ़्या तौर पर भी (ऐसा) वा'दा न लो सिवाए इस के कि तुम फ़क़त शरीअ़त की (रू से किनायतन) मा'रूफ़ बात केह दो, और (इस दौरान) अ़क़्दे निकाह का पुख़्ता अ़ज़्म न करो यहां तक कि मुक़र्ररा इद्दत अपनी इन्तिहा को पहुंच जाए, और जान लो कि अल्लाह तुम्हारे दिलों की बात को भी जानता है तो उस से डरते रहा करो, और(येह भी) जान लो कि अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला बड़ा हिल्मवाला है।

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ
مَا لَمْ تَمَسُّوْهُنَّ اَوْ تَفْرِضُوْا لَهُنَّ
فَرِيْضَةً ۖ وَّ مَتِّعُوْهُنَّ ۚ عَلَى الْمُوْسِعِ
قَدَرُهٗ وَعَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهٗ ۚ مَتَاعًا
بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٣٦﴾

236. तुम पर इस बात में (भी) कोई गुनाह नहीं कि अगर तुमने (अपनी मन्कूहा) औरतों को उन के छूने या उनके महर मुक़र्रर करने से भी पहले तलाक़ दे दी है तो उन्हें (ऐसी सूरत में) मुनासिब ख़र्चा दे दो, वुस्अ़तवाले पर उस की हैसियत के मुताबिक़ (लाज़िम) है और तंगदस्त पर उस की हैसियत के मुताबिक, (बहर तौर) येह खर्चा मुनासिब तरीक़ पर दिया जाए, येह भलाई करनेवालों पर वाजिब है।

وَاِنْ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ
تَمَسُّوْهُنَّ وَ قَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ
فَرِيْضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ اِلَّاۤ اَنْ
يَّعْفُوْنَ اَوْ يَعْفُوَا الَّذِيْ بِيَدِهٖ عُقْدَةُ
النِّكَاحِ ۭ وَاَنْ تَعْفُوْۤا اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۭ
وَلَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ
بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٣٧﴾

237. और अगर तुमने उन्हें छूने से पहले तलाक़ दे दी दर आं हाली कि तुम उन का महर मुक़र्रर कर चुके थे तो उस महर का जो तुमने मुक़र्रर किया था निस्फ़ देना ज़रूरी है सिवाए इस के कि वोह (अपना हक़) खुद मुआफ़ कर दें या वोह (शौहर) जिस के हाथ में निकाह की गिरह है मुआफ़ कर दे (या'नी बजाए निस्फ़ के ज़ियादह या पूरा अदा कर दे), और (ऐ मर्दो !) अगर तुम मुआफ़ कर दो तो येह तक़्वा के क़रीबतर है, और (कशीदगी के इन लम्हात में भी) आपस में एहसान करना न भूला करो, बेशक अल्लाह तुम्हारे आ'माल को खूब देखनेवाला है।

حٰفِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَ الصَّلٰوةِ
الْوُسْطٰى ۗ وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ ﴿٢٣٨﴾

238. सब नमाज़ों की मुहाफ़िज़त किया करो और बिल ख़ुसूस दरमियानी नमाज़ की, और अल्लाह के हुज़ूर सरापा अदबो नियाज़ बन कर क़ियाम किया करो।

فَاِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا اَوْ رُكْبَانًا ۚ
فَاِذَاۤ اَمِنْتُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَمَا
عَلَّمَكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٩﴾

239. फिर अगर तुम ह़ालते ख़ौफ़ में हो तो पियादह या सवार (जैसे भी हो नमाज़ पढ़ लिया करो), फिर जब तुम ह़ालते अम्न में आ जाओ तो उन्ही तरीक़ों पर अल्लाह को याद करो जो उसने तुम्हें सिखाए हैं जिन्हें तुम (पहले) नहीं जानते थे।

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ
اَزْوَاجًا ۖ وَّصِيَّةً لِّاَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا

240. और तुम में से जो लोग फ़ौत हों और (अपनी) बीवियां छोड़ जाएं उन पर लाज़िम है कि (मरने से पहले)

إِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ إِخْرَاجٍ ۚ فَإِنْ
خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي مَا
فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَعْرُوفٍ ۗ
وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٤٠﴾

अपनी बीवियों के लिए उन्हें एक साल तक का ख़र्चा देने (और) अपने घरों से न निकाले जाने की वसिय्यत कर जाएं, फिर अगर वोह ख़ुद (अपनी मरज़ी से) निकल जाएं तो दस्तूर के मुताबिक़ जो कुछ भी वोह अपने हक़ में करें तुम पर इस मुआमले में कोई गुनाह नहीं, और अल्लाह बड़ा ग़ालिब बड़ी हिक्मतवाला है।

وَلِلْمُطَلَّقَاتِ مَتَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ ۖ
حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِينَ ﴿٢٤١﴾

241. और तलाक़ याफ़्ता औ़रतों को भी मुनासिब तरीक़े से ख़र्चा दिया जाए, येह परहेज़ारों पर वाजिब है।

كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ
لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٢٤٢﴾ ع ٣١ ١٥

२४२. इसी तरह् अल्लाह तुम्हारे लिए अपने अह्काम वाज़ेह फ़रमाता है ता कि तुम समझ सको।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ خَرَجُوا مِنْ
دِيَارِهِمْ وَهُمْ أُلُوفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ ص
فَقَالَ لَهُمُ اللَّهُ مُوتُوا قف ثُمَّ أَحْيَاهُمْ ۚ
إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ
وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٢٤٣﴾

243. (ऐ ह़बीब!) क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जो मौत के डर से अपने घरों से निकल गए हालांकि वोह हज़ारों (की ता'दाद में) थे, तो अल्लाहने उन्हें हुक्म दिया मर जाओ (सो वोह मर गए), फिर उन्हें ज़िन्दह फ़रमा दिया, बेशक अल्लाह लोगों पर फ़ज़्ल फ़रमानेवाला है मगर अक्सर लोग(उस का) शुक्र अदा नहीं करते।

وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَاعْلَمُوا
أَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٤٤﴾

244. (ऐ मुसल्मानों !) अल्लाह की राह में जंग करो और जान लो कि अल्लाह ख़ूब सुननेवाला जाननेवाला है।

مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا
حَسَنًا فَيُضَاعِفَهُ لَهُ أَضْعَافًا
كَثِيرَةً ۚ وَاللَّهُ يَقْبِضُ وَيَبْسُطُ ص
وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٤٥﴾

245. कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़े ह-सना दे फिर वोह उस के लिए उसे कई गुना बढ़ा देगा, और अल्लाह ही (तुम्हारे रिज़्क़में) तंगी और कुशादगी करता है, और तुम उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الْمَلَاِ مِنْۢ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى ۘ اِذْ قَالُوْا لِنَبِيٍّ لَّهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ اَلَّا تُقَاتِلُوْا ؕ قَالُوْا وَ مَا لَنَاۤ اَلَّا نُقَاتِلَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ قَدْ اُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَ اَبْنَآئِنَا ؕ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۴۶﴾

246. (ऐ ह़बीब!) क्या आपने बनी इसराईल के उस गिरोह को नहीं देखा जो मूसा (عليه السلام) के बा'द हुवा, जब उन्होंने अपने पयग़म्बर से कहा कि हमारे लिए एक बादशाह मुक़र्रर कर दें ताकि हम (उस की क़ियादत में) अल्लाह की राह में जंग करें, नबीने (उनसे) फ़रमाया : कहीं ऐसा न हो कि तुम पर क़िताल फ़र्ज़ कर दिया जाए तो तुम क़िताल ही न करो, वोह केहने लगे : हमें क्या हुवा है कि हम अल्लाह की राह में जंग न करें हालांकि हमें अपने घरों से और औलाद से जुदा कर दिया गया है, सो जब उन पर क़िताल फ़र्ज़ कर दिया गया तो उन में से चन्द एक के सिवा सब फिर गए, और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जानने वाला है।

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوْتَ مَلِكًا ؕ قَالُوْۤا اَنّٰى يَكُوْنُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَ نَحْنُ اَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَ لَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ ؕ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىهُ عَلَيْكُمْ وَ زَادَهٗ بَسْطَةً فِي الْعِلْمِ وَ الْجِسْمِ ؕ وَ اللّٰهُ يُؤْتِيْ مُلْكَهٗ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۴۷﴾

247. और उनसे उनके नबी ने फ़रमाया : बेशक अल्लाहने तुम्हारे लिए तालूत को बादशाह मुकर्रर फ़रमाया है, तो केहने लगे कि उसे हम पर हुक्मरानी कैसे मिल गई? हालां कि हम उस से हुकूमत (करने) के ज़ियादह ह़क़दार हैं उसे तो दौलत की फ़रावानी भी नहीं दी गई, (नबीने) फ़रमाया : बेशक अल्लाहने उसे तुम पर मुन्तख़ब कर लिया है और उसे इल्म और जिस्म में ज़ियादह कुशादगी अ़त़ा फ़रमा दी है, और अल्लाह अपनी सल्तनत (की अमानत) जिसे चाहता है अ़ता फ़रमा देता है, और अल्लाह बड़ी वुस्अ़तवाला ख़ूब जाननेवाला है।

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اٰيَةَ مُلْكِهٖۤ اَنْ

248. और उन के नबी ने उनसे फ़रमाया : इसकी

يَأْتِيَكُمُ التَّابُوتُ فِيهِ سَكِينَةٌ
مِّن رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ
آلُ مُوسَىٰ وَآلُ هَارُونَ تَحْمِلُهُ
الْمَلَائِكَةُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لَّكُمْ
إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٢٤٨﴾ ع ٣٢ ١٦
فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوتُ بِالْجُنُودِ قَالَ
إِنَّ اللَّهَ مُبْتَلِيكُم بِنَهَرٍ فَمَن
شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي وَمَن لَّمْ
يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُ مِنِّي إِلَّا مَنِ
اغْتَرَفَ غُرْفَةً بِيَدِهِ ۚ فَشَرِبُوا
مِنْهُ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ ۚ فَلَمَّا
جَاوَزَهُ هُوَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ
قَالُوا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوتَ
وَجُنُودِهِ ۚ قَالَ الَّذِينَ يَظُنُّونَ
أَنَّهُم مُّلَاقُو اللَّهِ كَم مِّن فِئَةٍ
قَلِيلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيرَةً بِإِذْنِ
اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿٢٤٩﴾
وَلَمَّا بَرَزُوا لِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ
قَالُوا رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا
وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى
الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٢٥٠﴾

सल्तनत (के मिन जानिब अल्लाह होने) की निशानी येह है कि तुम्हारे पास सन्दूक़ आएगा उस में तुम्हारे रब की तरफ़ से सुकूने क़ल्ब का सामान होगा और कुछ आले मूसा और आले हारून के छोड़े हुए तबर्रुकात होंगे उसे फ़रिश्तोंने उठाया हुआ होगा, अगर तुम ईमानवाले हो तो बेशक उसमें तुम्हारे लिए बड़ी निशानी है।

249. फिर जब तालूत अपने लश्करों को ले कर शहर से निक्ला, तो उसने कहा : बेशक अल्लाह तुम्हें एक नहर के ज़रीए आज़मानेवाला है, पस जिस ने उस में से पानी पिया सो वोह मेरे (साथियों में) से नहीं होगा, और जो उस को नहीं पिएगा पस वोही मेरी (जमाअ़त) से होगा, मगर जो शख़्स अपने हाथ से सिर्फ़ एक चुल्लू (की हृद तक) पी ले (उस पर कोई हर्ज नहीं) सो उन में से चन्द लोगों कि सिवा बाक़ी सबने उस से पानी पी लिया, पस जब तालूत और उन के ईमानवाले साथी नहर के पार चले गए, तो केहने लगे : आज हम में जालूत और उस की फ़ौजों से मुक़ाबले की ताक़त नहीं, जो लोग येह यक़ीन रखते थे कि वोह (शहीद हो कर या मरने के बा'द) अल्लाह से मुलाक़ात का शर्फ़ पानेवाले हैं, केहने लगे : कई मर्तबा अल्लाह के हुक्म से थोड़ी सी जमाअ़त (ख़ासी) बड़ी जमाअ़त पर ग़ालिब आ जाती है, और अल्लाह सब्र करनेवालों को अपनी मइय्यत से नवाज़ता है।

250. और जब वोह जालूत और उस की फ़ौजों के मुक़ाबिल हुए तो अ़र्ज़ करने लगे : ऐ हमारे परवरदिगार ! हम पर सब्र में वुस्अ़ते अरज़ानी फ़रमा और हमें साबित क़दम रख और हमें काफ़िरों पर ग़ल्बा अ़ता फ़रमा।

فَهَزَمُوْهُمْ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۙ وَقَتَلَ
دَاوٗدُ جَالُوْتَ وَاٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ
وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهٗ مِمَّا يَشَآءُ ؕ وَ
لَوْ لَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ
بِبَعْضٍ ۙ لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ وَلٰكِنَّ
اللّٰهَ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۵۱﴾
تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ
بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۲۵۲﴾

251. फिर उन्होंने उन (जालूती फ़ौजों) को अल्लाह के अम्र से शिकस्त दी, और दाऊद (علیہ السلام) ने जालूत को क़त्ल कर दिया और अल्लाहने उन को (या'नी दाऊद علیہ السلام को) हुकूमत और हिक्मत अ़ता फ़रमाई और उन्हें जो चाहा सिखाया, और अगर अल्लाह लोगों के एक गिरोह को दूसरे गिरोह के ज़रीए न हटाता रेहता तो ज़मीन (में इन्सानी ज़िन्दगी बा'ज़ जाबिरों के मुसल्सल तसल्लुत और ज़ुल्म के बाइस) बरबाद हो जाती मगर अल्लाह तमाम जहानों पर बड़ा फ़ज़्ल फ़रमानेवाला है।

252. येह अल्लाह की आयतें हैं हम इन्हें (ऐ ह़बीब !) आप पर सच्चाई के साथ पढ़ते हैं, और बेशक आप रसूलों में से हैं।